बालिकाओं का घटता अनुपात-म.प्र. के सन्दर्भ में एक अध्ययन

* डॉ. सुधीर सक्सेना

''कार्ल मार्क्स ने कहा था कि महिलाओं का स्तर ही समाज के विकास का आधार होता है ।''

भारत प्राचीन काल से ही एक धर्म प्रधान देश रहा है। भारतीय जीवन में सामाजिक एवं धार्मिक मूल्यों, मान्यताओं व मानदण्डों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय संस्कृति में नारी को एक गरिमामयी पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त है। नारी ही समाज के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। एण्डरसन नें कहा है कि बच्चों की प्राथमिक पाठशाला परिवार है, जिसमें माँ की भुमिका एक शिक्षिका के रूप में होती है। भारतीय जनसंख्या का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि भारतीय जनसंख्या में पुरुष महिलाओं कि अपेक्षा अधिक हैं। भारतीय समाज में बालिकाओं का घटता अनुपात एक चिंता का विषय बन गया है। महिला जनसंख्या की गिरती दर का प्रमुख कारण सामाजिक आर्थिक स्तर पर महिलाओं के साथ किये जाने वाले भेदभाव अन्याय और अत्याचार है। उन्हें व्यक्ति नहीं बल्कि वस्तु मानते हैं। यही कारण है कि 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में 1000 पुरुषों पर 933 महिलाएँ हैं जबकि 1901 में यह संख्या 972 थी।

भारत में लिंगानुपात की विशमता को एक गंभीर जनांकिकीय घटना बताते हूऐ कहा जाता है कि इतनी महत्त्वपूर्ण समस्या के प्रति न केवल जनांकिविद वरन समाजशास्त्री भी अनभिज्ञ हैं। ज्ञानचन्द्र के अनुसार–सबसे महत्त्वपूर्ण बिन्दु यह है कि सभी इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं कि यह भी कोई समस्या है, जिसको गंभीरता से लिया जाना चाहिए। अभी तक महिलाओं की संख्या की कमी केवल सांख्यिकीय रुचि का विषय मात्र है। समाजशास्त्री, अनुवांशिक विशेषज्ञ और यहॉ तक कि जनसंख्या शास्त्री भी अंधेरे में हैं। भारत में केवल केरल ही एक मात्र राज्य है जहां पर साक्षरता का प्रतिशत अधिक है और प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या अधिक हैं। केरल को छोडकर शेश सभी राज्यों में महिला अनुपात कम है जो एक चिन्ता का विषय है। मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता पूर्व के पचास वर्षों में लिंग अनुपात की गिरावट की दर राश्ट्रीय अनुपात के हिसाब से कम थी। बाद के चालीस वर्शों में यह दर लगभग दुगुनी हो गयी। प्रति हजार पुरुषों पर मध्यप्रदेश में महिलाओं की घटती संख्या का विवरण निम्नानुसार है–

तालिका क. 01

वर्ष	महिला की संख्या
1951	967
1981	941
1991	931
2001	919

प्रति हजार पुरुषों के पीछे महिलाओं की संख्या में कमी आई है। लम्बे समय तक गिरावट पर ध्यान नहीं दिया गया है। महिला लिंग अनुपात में गिरावट के संबंध में देवास के औद्योगिक क्षेत्र में शांतिनगर तथा सर्वोदय नगर औद्योगिक बस्तियों में सर्वेक्षण किया गया तथा श्रमिकों से कन्या के जन्म तथा महिलाओं कि स्थिति के संबंध में जानकारी प्राप्त की गई। इस हेतु लगभग 200 निदर्शन का उद्देश्य पूर्ण निदर्शन विधि से चयन किया गया तथा तथ्यों को एकत्रित किया गया। निश्चित ही जन्म में प्राथमिकता जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण होती है, क्योंकि लडके के जन्म को प्राथमिकता देने के कारण परिवार में बच्चों कि संख्या में वृद्धि हो जाती है। इस कारण से श्रमिकों से जन्म में प्राथमिकता के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिये यह प्रश्न किया गया कि ''आपके परिवार में किस के जन्म को प्राथमिकता दी जाती है, लडके के अथवा लडकी के ?'' लगभग 200 उत्तर दाताओं से प्राप्त उत्तर तालिका क्रमांक 03 में दिये जा रहे हैः–

तालिका क. 02

जन्म को प्राथमिकता	शांति नगर	सर्वोदय नगर	कुल
लडका	34	37	**71**
लडकी	24	22	**46**
दोनो	**42**	**41**	**83**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि लडकी के जन्म को प्राथमिकता देने वाले श्रमिकों की संख्या लडके के जन्म को प्राथमिकता देने वाले श्रमिकों कि तुलना में कम है। यह अवश्य है कि दोनो के जन्म के प्रति श्रमिकों का उत्तर सकारात्मक है। अधिकतर श्रमिकों का यह कहना था कि लडका ही हमारा पिण्ड दान कर सकता है, जिससे हमें मोक्ष की प्राप्ति होती है। लडका ही हमारे को पूर्व जन्मों के ऋणों से मुक्ति दिला सकता है। साथ ही लडका हमारे कार्यों में सहयोग प्रदान कर परिवार का पेट पाल सकता है जबकि लडकी हमारे लिये एक जिम्मेंदारी हो जाती है तथा उसके लिये हमें काफी दहेज की व्यवस्था करनी पडती है जो कि हमारे समाज में प्रचलित है। सर्वेक्षण के माध्यम से यह तथ्य भी ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि ''श्रमिक परिवारों में महिलाओं कि स्थिति कैसी है, विशेषकर अविवाहित, विधवा तथा तलाकशुदा ?'' उत्तर दाताओं से प्राप्त उत्तर तालिका कमांक 03 में दिये जा रहे हैः–

तालिका क्र. 03

महिलाओं की स्थिति	शांती नगर	सर्वोदय नगर	कुल
निम्न स्तरीय	42	47	89
अच्छी	37	35	72
कोई उत्तर नहीं	21	18	39

*** समाज शास्त्र विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धार**

तालिका से स्पष्ट है, कि ऐसे श्रमिक जो कि परम्परागत ग्रामीण क्षेत्रों के हैं उनके परिवारों में अविवाहित, विधवा तथा तलाकशुदा महिलाओं कि स्थिति निम्न है, क्योंकि वहां शिक्षा का स्तर निम्न है। कई महिलाएँ तो अत्यन्त ही निम्न स्तरीय जीवन यापन कर रहीं हैं। इस कारण से ऐसे श्रमिक परिवार लडकी के जन्म को प्राथमिकता नहीं देते हैं। इसप्रकार इस सर्वेक्षण के माध्यम से मध्यप्रदेश में विशेष रूप से श्रमिक क्षेत्रों में जहाँ जनसंख्या घनत्व अधिक होता है वहाँ महिला लिंग अनुपात में कमी के मुख्य कारणों का पता चलता है। इसके अतिरिक्त समाज में आज कन्या के भ्रुण परीक्षण के माध्यम से भ्रुण का आसानी से पता लगाकर उसे अवांछित वस्तु की तरह नष्ट करने की घिनौनी प्रवृत्ति बढती जा रही है। इस दुष्कृति के लिये आधुनिक चिकित्सा पद्धति भी जिम्मेंदार है। 2006 में किये गये सर्वेक्षण के अनुसार ऐसा अनुमान है कि भारत में पिछले दो दशकों में 1 करोड लडकियों को गर्भ में ही मार दिया गया। यह रिपोर्ट दस लाख से ज्यादा घरों में किये गये सर्वेक्षण के आधार पर प्रकाशित की गई। रिपोर्ट के अनुसार पुत्र है या पुत्री इसकी जाँच कराने के पश्चात गर्भपात के कारण हर साल करीब 5 लाख लडकियां जन्म नहीं ले पाती है। भारतीय महिला की स्थिति वास्तव में चिंताजनक है। एक **छ'** की रिपोर्ट के अनुसार लगभग 1 करोड कन्या भ्रुण में से 20 लाख कन्या भ्रुणों का गर्भपात करा दिया गया। राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा डॉ. गिरिजा व्यास के अनुसार कन्या भ्रुणों के गर्भपात में हो रही वभध्दि चिंता का विषय है। 1981–91 के समय लगभग 1 करोड 37 लाख कन्या भ्रुणों का गर्भपात कराया गया। यदि यही स्थिति रहती है तो वर्ष 2011 तक लगभग 2 करोड 30 लाख कन्या भ्रुणों का गर्भपात कराया जावेगा। जबकि इस कृत्य को 1994 में ही गैर कानूनी घोशित किया जा चुका है। समाज में आज भी व्याप्त अधविश्वास तथा अज्ञानता के कारण कि जब तक पुत्र द्वारा पिंड दान नहीं किया जावेगा तब तक मोक्ष प्राप्त नहीं होगा, कन्या भ्रुण हत्या आसानी से कर दी जाती है। मुरैना क्षेत्र में जन्म लेने वाली कन्या के मुंह में तम्बाकू भर दिया जाता है जिससे दम घुटनें से उसकी मौत हो जाती है। इसीप्रकार राजस्थान में दुध से भरी मटकी में कन्या का सिर डुबो कर मार दिया जाता है। यही कारण है कि स्त्री को हीन समझने के कारण ही स्त्री पुरुश के अनुपात में इतना अंतर आया है।

मध्यप्रदेश में 1951 से 1991 के बीच महिला आबादी की कमी में एक चिंताजनक पहलू उजागर होता है। इस अवधि में महिला आबादी की गिरावट 45 आयी है, जो निश्चित ही शोचनीय है। भारत में स्त्री शिक्षा का प्रतिशत कम है इसके बावजूद भी ग्रामीण समाज में प्रति हजार पुरुषों में नगरीय समाज की अपेक्षा स्त्रीयों की संख्या अधिक है।

तालिका क. 04

वर्ष	ग्रामीण	नगरीय
1951	965	859
1981	954	880
1991	938	894
2001	919	879

कन्या भ्रुण हत्या अशिक्षित महिलाओं की अपेक्षा शिक्षित महिलाओं में अधिक है ये उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हो जाता है। उपरोक्त तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षित समाज में भी कन्या का बोझ ही माना जाता है तथा कन्या के स्थान पर लडके के जन्म को ही प्राथमिकता दी जाती है। इन्हीं कन्या विरोधी धारणाओं का परिणाम कन्या भ्रुण हत्या जैसे घिनौने कभत्य के रुप में सामने आता है। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या यह धारणा सही है जो आज भी इस आधुनिक समाज में चल रही है जबकि हम वैश्विक समाज में सांस ले रहें हैं। कानूनी प्रावधान के अनुसार निश्चित ही भ्रुण का लिंग परीक्षण करना तथा गर्भपात कराना कानूनी अपराध है। जिसके अन्तर्गत ऐसा करने वालों को कठोर कारावास और 50,000 रुपये तक का प्रावधान है। भारत सरकार तथा मध्यप्रदेश सरकार द्वारा स्वास्थ्य विभाग की ओर से प्रचार–प्रसार किया जाता है लेकिन इस सबके बावजूद इस प्रकार के परीक्षण चोरी छुपे कराये जाते हैं तथा गर्भपात भी कराये जाते हैं। जिससे महिलाओं को स्वास्थ्य संबन्धी विभिन्न समस्याओं को झेलना पडता है जैसे कि– बांझपन, कमर दर्द, कमजोर स्वास्थ्य, यौन संक्रमण, बच्चेदानी का केंसर आदि।

इसके लिये आवश्यक है कि जनसाधरण द्वारा जागरुकता समाज में लायी जाये जिससे की कानूनों को प्रभावशाली ढंग से लागू किया जा सके, केवल कानून बना देना ही आवश्यक नहीं है। शासन के द्वारा इस संबंध में कठोर कदम उठाये जाने चाहिये। समाज में बेटा–बेटी के प्रति दोहरी मानसिकता को त्यागने के संबंध में जागरुकता लानी होगी। इस संबंध में स्वयं सेवी संगठनों की भी भूमिकाऐं महत्त्वपूर्ण हो जाती है। हमें समाज में यह संदेश देना होगा कि ''यत्र नार्यस्त पूज्यन्ते तत्र देवता रमन्ते'' जैसे विचार पलते हैं वहां कन्या भ्रूण हत्या जैसे कृत्य सामने आते हैं जो कि अत्यन्त ही शर्मनाक है। हमें समाज में शिक्षित वर्ग को भी यह समझाना होगा कि मात्र शिक्षित हो जाने से ही समाज की प्रगति नहीं होती है। उपरोक्त प्रयासों के माध्यम से ही हम घठते हुऐ महिला अनुपात में कमी ला सकते हैं। इसके प्रचार–प्रसार को संचार माध्यमों से और अधिक लोगों तक पहुँचाना चाहिऐ, हाल ही में कलर्स चेनल पर "लाडो" नाम का धारावाहिक कन्या जन्म हत्या पर प्रारंभ हो रहा है जिसमें इसप्रकार की कुप्रथाओं को दर्शाया गया है। इस प्रकार के प्रयास ही समाज में जनचेतना लाने में सहायक होंगे।

सन्दर्भ–

दैनिक भास्कर– 10 जनवरी 06, दिसम्बर 08
जे पी मिश्रा– जनांकिकी 2006, पशठ 377 साहित्य भवन, आगरा
ज्ञानचन्द्र–पापुले न पर्सपेक्टिव, पशठ 361
विश्व स्वास्थ्य संगठन, जेनेवा – वुमेंन, हेल्थ एण्ड डेवलपमेंन्ट, 1985, पशठ 10
राम आहुजा – क्राइम अगेन्स्ट वीमेंन, रावत प्रकाशन, जयपुर
अमर्त्य सेन– भारत : विकास की दिशाऐं प शठ 36
डॉ. आर. एन. त्रिवेदी– रिसर्च मेंथ्डोलॉजी, कालेज बुक डिपो, जयपुर
अशोक कुमार गुप्ता– नऐ औद्यौगिक शहरी क्षेत्रों में गंदी बस्तियॉ